Rupali chaubey

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(A) पारदर्शिता का प्रशासन में स्थान

प्रशासन का बुनियादी मूल्य पारदर्शिता है।
पारदर्शिता का अर्थ सत्यनिष्ठा, सूचना की तक आसानी से पहुँच को होता है।
यह प्रशासन में जवाबदेहिता व उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करती है।

(B) प्लेटो के अनुसार मनुष्य की प्रवृत्तियों को लिखो।

ग्रीक दार्शनिक प्लेटो के अनुसार मनुष्य की तीन प्रवृत्तियाँ होती हैं–
- विवेक
- साहसी
- संयमी

(C) वस्तुनिष्ठता

अपने कार्यों व निर्णयों का कानून, नियमों, आचरण संहिता के आधार पर लेना।
जैसे पदों की नियुक्ति, संविदाओं की स्वीकृति, व्यक्तिविशेष को पुरस्कार, लाभों व कार्यों की संस्तुति आदि
उनके कर्मों व योग्यताओं को आधार बनाया जाता है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(D) नैतिक मूल्यों को परिभाषित करो?

मनुष्य अपने जीवन में कुछ लक्ष्यों व उद्देश्यों को स्वीकार करता है तथा इन लक्ष्यों की पूर्ति में जो आदर्श रूप से स्वीकार किये जाते हैं या सहायक होते है उन्हे नैतिक मूल्य कहते है

- नैतिक मूल्य व्यक्ति को उत्कृष्ट व गरिमापूर्ण बनाते हैं।
- उदा. :- दया, करुणा, प्रेम, सत्यनिष्ठा आदि

(E) इच्छामृत्यु का सिद्धांत लिखो?

इच्छा मृत्यु का आशय बीमार व्यक्ति की मंजूरी के बाद जानबूझकर ऐसी दवाई देना जिसमें मरीज की मौत हो जाती।

- नीदरलैंड व बेल्जियम में वैध किंतु भारत में इच्छा मृत्यु कानून रूप से वैध नहीं
- कई विचारकों का कहना है जैसे प्राकृतिक रूप से जन्म होता वैसे मृत्यु भी प्राकृतिक होनी चाहिए।
- किंतु कोमा, पीड़ा युक्त अवस्था आदि को इच्छा मृत्यु 'सम्मानजनक मौत' का उदा. होगा।

(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(F) The Problem of Rupee के लेखक

(G) अभिक्षमता की तीन विशेषताएं?

अभिक्षमता, आंतरिक सामर्थ्य को इंगित करती है

- जो उसके वर्तमान गुणों का समुच्चय तथा उसकी भावी क्षमताओं की ओर इंगित करता है

- अभिक्षमता जन्मजात या अर्जित हो सकती है।

(H) आचरण किसे कहते हैं?

आचरण से आशय आपके व्यवहार व चरित्र से लिया जाता जो आप, परिवार, समाज, संगठन आदि में करते है

- आचरण को सही दिशा में निर्देशित करने के लिए नीतिसंहिता व आचरण संहिता का निर्माण किया जाता है

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(1) चार आर्य सत्य लिखो

भगवान बुद्ध ने धर्म में चार आर्य सत्यों की बात कही गई है

चार आर्य सत्य

- दुःख → जीवन दुःखों से परिपूर्ण
- दुःख समुदाय ⇒ दुःख का कारण प्रतित्यसमुत्पाद के माध्यम से व्यक्त किया
- दुःख निरोध ⇒ दुःख निरोध को (तृष्णा के नाश) निर्वाण कहा।
- दुःख निरोध गामिनी ⇒ दुःख निरोध का अष्टांगिक मार्ग बताया।

(2) करुणा क्या है?

- प्राणी मात्र के लिए मंगलकामना का भाव निहित होता है
- करुणा दुःखी एवं कमजोर व्यक्तियों या प्राणियों के प्रति उत्पन्न होने वाली ऐसी भावना जो उन्हें गंभीर दुःखद स्थिति को समझने समानुभूतिपूर्वक चिंता रखने व उनके दुःखों को दूर करने के प्रयासों को प्रोत्साहित करती है।
- दुःखियों एवं जरूरतमंदों की सेवा का भाव निहित होता है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(K) लोक सेवकों के कार्य =)

किसी भी देश के शासन का सुचारू पूर्वक संचालन के लिए लोक सेवकों की आवश्यकता होती है जिसके कार्य –

- कानून-व्यवस्था को बनाए रखना।
- नीतियों/कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक कार्यान्वयन।
- नीतियों के निर्माण में सलाहकार व मददगार होते।
- जनहित में कार्य करना।
- लोगों को सार्वजनिक सेवाएं उपलब्ध करना।

(b) नैतिक संहिता व आचरण संहिता में अंतर

नैतिक संहिता	आचरण संहिता
नैतिक नियमों का पुलिन्दा जो सदस्यों के व्यवहार व निर्णय लेने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करता है।	- नियमों का संग्रह हो जो किसी समाज या संगठन के सदस्यों के आचरण को नियमित व निर्देशित करता है
- उल्लंघन पर दण्ड नहीं	- उल्लंघन पर दण्ड का प्रावधान

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

(M) मनोवृत्ति ईर्ष्याभाव

(N) The Hindu के लेखक

(O) The politics के लेखक

- The politics राजनीति पर आधारित कृति है
- लेखक ग्रीक दार्शनिक अरस्तू है
- इस रचना में उन्हो राज्य की विशेषता व कार्य के बारे में बताया है

KAUTILYA ACADEMY

Q (A)

सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता के रूप में राजाराम मोहन राय की भूमिका स्पष्ट करो?

राजाराममोहन राय को आमतौर पर आधुनिक भारत के समाजसुधारकों में अग्रणी व भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है तथा इनके द्वारा ही तत्कालीन समाज में फैली बुराईयों को उजागर किया।

सामाजिक सुधार आंदो. के प्रणेता के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में राजाराममोहन की भूमिका इसप्रकार है =)

राजाराम मोहन राय की भूमिका

- सामाजिक क्षेत्र
- धार्मिक क्षेत्र
- राजनीतिक
- शिक्षा के क्षेत्र में

सामाजिक क्षेत्र => जाति प्रतिप्रथा, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना का तीव्र विरोध किया।

- नारी उत्थान के समर्थक उन्होंने बालविवाह, बहुविवाह, बहुपत्नीप्रथा का विरोध

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

- सती प्रथा के विरोध मे व्यापक आंदो. व उसको समाप्त किया
- अंधविश्वास, रूढ़िवादी विचारधारा का विरोध

धार्मिक क्षेत्र => मूर्तिपूजा का विरोध
=> वेदो, उपनिषदों की तार्किक व्याख्या की।
- परम्पराओं के अंधानुकरण का विरोध किया
- एकेश्वरवाद का प्रतिपादक बहुदेववाद का खंडन
- धार्मिक सहिष्णुता

राजनीतिक क्षेत्र => प्रेस तथा भाषण की स्वतंत्रता पर बल दिया।
- नागरिको के अधिकार व विधि के शासन आदि

शिक्षा => पाश्चात्य शिक्षा के पक्षधर थे
- स्त्री शिक्षा के समर्थक

इस तरह राजाराममोहन राय की अनेक क्षेत्रो मे अग्रणी भूमिका निभाई इसलिए इन्हे भारतीय राष्ट्रवाद का अग्रदूत कहा जाता है।

प्रश्न संख्या 3 (b)

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की व्याख्या के विचारों को स्पष्ट करें?

प्लेटो एक ग्रीक दार्शनिक है व सुकरात के शिष्य है, इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'रिपब्लिक' में न्याय के सिद्धांत की व्याख्या कि व उसमें उन्होंने चार कार्डिनल को पर विशेष बल दिया है।

प्लेटो ने न्याय को विवेक, साहसी व संयम के रूप में समझाया है जिसमें वहां विवेकी वर्ग शासक बने, साहसी व्यक्ति योद्धा व संयमी व्यक्ति उत्पादन का कार्य करें तथा तीनों एक दूसरे में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो न्याय की स्थापना होगी।

इसी न्याय को प्लेटो ने दो स्तरों पर स्थापित किया

- व्यक्ति के स्तर पर
- राज्य के स्तर पर

व्यक्ति के स्तर पर न्याय ⇒ जो व्यक्ति अपने विवेक से साहस व संयम को नियंत्रित करता है उसमें न्याय सद्गुण की उत्पत्ति होती है।

- ऐसा व्यक्ति जीवन में न्यायपूर्ण आचरण करेगा।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार

• ⇒ वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाईयों धैर्य के साथ वासनाओं को संयम द्वारा नियंत्रित करता है इसी संदर्भ में प्लेटो कहते है न्याय मानव आत्मा की उचित अवस्था है

राज्य स्तर पर न्याय ⇒ राज्य आत्मा का वृहद रूप है जिसमें राज्य में विवेकी वर्ग शासन करें, साहसी वर्ग रक्षा करें तथा संयमी वर्ग उत्पादन का कार्य करें तथा दूसरों के कार्यों में कोई हस्तक्षेप न करें तो फिर न्याय की उत्पत्ति होती है

• प्लेटो ने न्याय को अहस्तक्षेप का सिद्धांत बताया है

इस तरह प्लेटो ने न्याय को प्रस्तुत किया जिसकी वर्तमान में विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका द्वारा अपने कार्यों को करने व एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करने पर न्याय की अवधारणा साकारित होगी।

(Mains Answer Sheet)

नव-वेदांत के रूप में राधाकृष्णन के विचारों को स्पष्ट कीजिये?

राधाकृष्णन एक महान दार्शनिक थे व उनकी हिन्दू जीवन दर्शन के नैतिक व आध्यात्मिक विचारों में गहन निष्ठा थी। वह अद्वैतवाद में विश्वास रखते हुए वह नव-वेदांती परंपरा में विश्वास रखते थे।

नव-वेदांत में राधाकृष्णन के विचारों को इस प्रकार व्यक्त करते है-

- वे वेदांत दर्शन की व्यवहारिक व युगानुकूल व्याख्या करते है।
- नैतिक नवजागरण का संदेश दिया।
- मानवतावादी दृष्टिकोण का समर्थन किया।
- वे मानवीय मूल्यों एवं मानव की गरिमा एवं महत्ता की रक्षा की बात करते हैं।
- व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर मानव कल्याण को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं।
- व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल देते हैं।
- व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास की बात करते हैं।

भारत का प्र. । संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

- जीवन व जगत के प्रति भावात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, वे जगत से पलायन की बजाय जीवन व जगत में सक्रियता युक्त मूल्यों के पालन की बात करते हैं।
- भारत के आध्यात्मिक पक्ष व पश्चिम के आधुनिक पक्ष में समन्वय करना चाहते थे।

इस तरह विवेकानन्द ने नव-वेदांत में अपने विचारों को प्रस्तुत किया जो आधुनिक युग में प्रासंगिक प्रतीत होते और मानव के कल्याण को अंतिम लक्ष्य मानते हैं।

(Mains Answer Sheet)

संख्या

चौखंबा राज्य की अवधारणा स्पष्ट करो।

राम मनोहर लोहिया द्वारा यह चौखंबा राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की जो एक समाजवादी राजनेता, देशभक्त व स्वतंत्र चिंतक थे। इनकी समाजवादी विचारधारा कार्ल मार्क्स से अधिक गांधी की विचारधारा से अधिक नजदीक थी।

चौखंबा राज्य की अवधारणा निम्न प्रकार से स्पष्ट करते है

- राजनैतिक विकेंद्रीकरण के रूप राज्य को चार स्तंभों में विभाजित किया।

चार स्तंभ

- पहला स्तंभ → गांव
- दूसरा स्तंभ → मण्डल (जिला)
- तीसरा स्तंभ → प्रांत (राज्य)
- चतुर्थ स्तंभ → केंद्र

- प्रत्येक स्तर पर कार्यों व शक्तियों का विभाजन कर दिया जाये।

कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

- गांवों, मण्डलों व नगरों में पंचायतें स्थापित की जाये जो कल्याणकारी नीतियों व कार्यों की जिम्मेदारी ले।
- 3- छोटे ग्रिड जरूरत की व्यवस्था का सुझाव भी दिया

इस तरह कोठिया ने स्वायत्त संस्थाओं की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया जिसे वर्तमान में पंचायती व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है जरूरत है कि ग्रामीण स्तर पर अधिक शक्तियां प्रदान की जाये ताकि कोठिया की संकल्पना को साकार कर सकें।

5

Q.4 (E) विवेकानंद जी के दरिद्रनारायण की व्याख्या कीजिये ?

विवेकानंद जी आधुनिक काल के समाजसुधारक, दार्शनिक थे जिन्होंने 1893 शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया व विश्व को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया तथा भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया।

विवेकानंद के दरिद्रनारायण को निम्न प्रकार से व्याख्यायित कर सकते है –

दरिद्रनारायण

→ मानववाद के आध्यात्मिक आधार को प्रतिपादित किया

→ दीन-दुखियों अर्थात मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा माना

→ 'दरिद्र' को 'नारायण' माना तथा उनकी सेवा व उनके दुःख दर्दों को दूर करने का प्रयास किया।

→ उनका कहना था कि एक मात्र ईश्वर जिसका अस्तित्व एक मात्र ईश्वर जिसपर विश्वास करता हूँ वह दीन-हीन, दुखी लोगों में निवास करता है।

5

→ उनका क्रांतिवादी रूप से यह भी कहना था कि मंदिरों में से भगवान को हटाकर दरिद्र को बसा देना चाहिए।

इस तरह विवेकानंद ने मानवता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म माना साथ ही यह परमात्मा की प्राप्ति 'दरिद्र नारायण' की सेवा से ही संभव बताया क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा का वास होता है अंततः हम परमात्मा की सेवा कर रहे हैं।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(Mains Answer Sheet)

(F) अंबेडकर जी के आर्थिक विचार स्पष्ट कीजिये?

अंबेडकर जी एक राजनैतिक विचारक, राष्ट्रवादी नेता थे इन्होने दलितोत्थान व संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई। भारतीय संविधान में अंबेडकर जी के विचारो को भी शामिल किया गया है जो वंचितों के हितो व उनके अधिकारों के पक्षधर है।

अंबेडकर जी के आर्थिक विचार देखे तो वह समाजवाद से प्रभावित थे जो इस प्रकार है -

- वह 'राज्य-समाजवाद' औद्योगिकरण व कृषि क्षेत्र में स्थापित करना चाहते थे।
- उनका मानना था कि बड़े उद्योग जैसे इंजीनियरिंग, खनन, संचार, परिवहन आदि राज्य के अधीन हो व राज्य द्वारा इनका संचालन हो।
- निजीकरण के विरोधी थे।
- बुनियादी उद्योगों पर भी राज्य का अधिकार हो।
- बीमा कंपनियों का राष्ट्रीयकरण हो जिससे लोगों के आर्थिक हितों की सुरक्षा व राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।
- कृषि का राष्ट्रीयकरण किया जाये व इसे उद्योगों का दर्जा प्राप्त हो।
- वह चाहते थे कि राज्य भूमि को निश्चित मानदण्डो के आधार पर फार्मो में विभाजित

करवाये, तथा कमे गांवों के विभिन्न वर्गों से मिलकर बने

- गांव में कृषि का विकास समान रूप से हो, असमानता न रहे।

इस तरह अम्बेडकर समाजवादी विचार धारा से प्रेरित होकर संसाधनों के केंद्रीयकरण की बजाय विकेंद्रीकरण पर बल दिया तथा सभी वर्गों व नागरिकों में समानता स्थापित की जा सके एवं कोई व्यक्ति रोटी के लिए न तरसे।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

गांधी जी की रामराज्य की संकल्पना को लिखो?

गांधी जी एक स्वतंत्रता सेनानी, दार्शनिक विचारक आदि थे जिसे भारत में राष्ट्रपिता की संज्ञा दी जाती है वह भारत में रामराज्य लाना चाहते जो वर्तमान की भी आवश्यकता है

गांधी जी के रामराज्य की संकल्पना को इस प्रकार देख सकते है –

- राज्य में समानता, स्वतंत्रता व सामाजिक न्याय स्थापित हो।
- छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना न हो।
- सर्वोदय का सिद्धांत हो अर्थात सभी का सब प्रकार से उदय हो।
- कुटीर उद्योग व लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया जाये।
- शक्तियों का विकेंद्रीकरण किया जाये।
- आर्थिक क्षेत्र में ट्रस्टीशिप की अवधारणा जिससे गरीबों का कल्याण हो सके।
- पंचायती राज के पक्ष में थे।
- अहिंसा पर बल, मशीनीकरण का विरोध किया।
- देश की बुराईयों को अहिंसात्मक प्रकार से दूर करना।
- सभी धर्मों का सम्भाव, सर्व धर्म सम्भाव होगा।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

वह राजनीति में नैतिकता की बात करते थे। राज्य को भी धर्म के अनुसार (नैतिक धर्म के आंतरिक पक्ष (दया, करुणा, प्रेम आदि) से संचालित होना चाहिए।

स्वदेशी का प्रचार-प्रसार हो।

वह अंतिम रूप से राज्य के पक्ष में नहीं था उनका मानना था कि जब व्यक्ति में आत्मसंयम है तो राज्य आवश्यक किंतु आगे चलकर जब सभी लोग स्वयं व अंतरात्मा से संचालित होने लगे, पाप व बचे तो राज्य को समाप्त कर देना चाहिए।

इस तरह गांधी जी के राम राज्य को देखा जा सकता जिसकी कुछ बातों को हमारे संविधान द्वारा ग्रहण किया गया है लेकिन कुछ अव्यवहारिक प्रतीत होती है किंतु उनके विचारों व बातों को मन, वचन, कर्म से लागू करने पर आंशिक रूप से राम राज्य स्थापित किया जा सकता है।

12.5

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार-

(4) संवेगिक बुद्धि से क्या आशय है इसके आयामों की चर्चा कीजिये?

संवेगिक बुद्धि, मनुष्य की ऐसी क्षमता है जिसमें व्यक्ति दूसरों के संवेगों को देखता है, समझता है, उसकी तीव्रता व प्रभाव का आकलन करता है एवं उन्हें नियंत्रित व प्रबंधित करते हुए वांछित अनुक्रिया करता है जिससे संबंधों में समन्वय बना रहता है।

संवेगिक बुद्धि के आयामों को जानने के लिए निम्न क्षेत्रों पर दृष्टि डालेंगे -

संवेगिक बुद्धि के आयाम

सामाजिक क्षेत्र | राजनैतिक | प्रशासनिक | अन्य

सामाजिक क्षेत्र ⇒ यदि व्यक्ति संवेगिक बुद्धि से युक्त है तो घर परिवार व समाज में संतुलित स्थापित करेगा। समाज में आई खाई को जोड़ेगा, तथा अपने संबंधों को अच्छे नियंत्रित करेगा।

राजनैतिक क्षेत्र ⇒ यदि नेतागण संवेगिक बुद्धि से युक्त होंगे तो लोगों की समस्याओं संवेदनशीलता से सुनेंगे।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

- नीतियों के निर्माण उन्ही आवश्यकताओं के अनुसार करेगी।

प्रशासनिक क्षेत्र ⇒ प्रशासक यदि धी बुद्धि से युक्त होगा तो जनकेन्द्रित कार्य करेगा।
- लोगों की संवेदनाओं को समझकर त्वरित कार्यवाही करेगा।

*

धर्म ⇒ धार्मिक क्षेत्र मे यदि लोग संवेगिक बुद्धि से युक्त सभी धर्मों के प्रति सद्भाव की भावना रखेंगे।

इस तरह संवेगिक बुद्धि के आयामों को देख सकते हैं जिसके होने पर समाजहित, देश, जनहित में कार्यों का कुशल रूप से संचालन होगा।

(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या (2)

मनोवृत्ति के निर्माण में रुचि का महत्व स्पष्ट करो?

मनोवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना, समाज आदेश के प्रति व्यक्ति की धारणा विचार उसे पसंद-नापसंद करने का भाव तथा विषय के प्रति कार्य करने की तत्परता से लिया जाता है।

वहीं रुचि में किसी व्यक्ति, वस्तु, के संदर्भ में विशेष लगाव व उसी दिशा में आगे बढ़ते अलग पसंद व सकारात्मक भाव रखते व वहीं कार्य करते हैं।

मनोवृत्ति के निर्माण में रुचि के महत्व को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं

मनोवृत्ति निर्माण

व्यक्ति विशेष में रुचि	वस्तु विशेष	क्षेत्र विशेष में रुचि	स्वभाव या आदत

व्यक्ति विशेष में रुचि => यदि किसी महान व्यक्ति में रुचि व उसके विचारों को चुनते व उन्हीं का अनुसरण करते।

वस्तु विशेष => यदि किसी पाठ्य पुस्तक में रुचि हो तो हम उस वस्तु को पसंद करने लगते हैं

क्षेत्र विशेष => किसी विशेष क्षेत्र जैसे राजनैतिक क्षेत्र रुचि होने पर मनोवृत्ति

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

इस क्षेत्र विशेष के प्रति निर्मित होता स्वभाव या आदत है। यदि हम स्वच्छता में रुचि रखते तो हम साफ-सफाई रखेंगे।

इस तरह रुचि, मनोवृत्ति और सकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण करती है अतः रुचि मनोवृत्ति को उस क्षेत्र में तीव्र गति से काम करने के लिए प्रेरित करती है।

प्रश्न संख्या (7)

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी — सफलता का प्रवेश द्वार

आचरण संहिता क्या है,? प्रशासन में इसकी उपयोगिता स्पष्ट करो?

आचरण संहिता किसी समाज या संगठन जैसे सदस्य के आचरण को नियमित व निर्देशित करने के लिए बनाए गए नियमों का संग्रह होता है। इसके माध्यम से 'क्या करना चाहिए' व 'क्या नहीं करना चाहिए' इसकी जानकारी सदस्यों को दी जाती है व उल्लंघन पर दण्डात्मक कार्यवाही का भी प्रावधान होता है।

प्रशासन में इसकी उपयोगिता को निम्न प्रकार से देख सकते है -

- ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा => अगर प्रशासक बेदाग कर्तव्य पालन हेतु पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करेगा तो प्रशासन सक्रियता व गतिशीलता बढ़ेगी।
- राजनीतिक तटस्थता निष्पक्षता => नीतियों के क्रिया-वयन के दौरान राज नेताओं से बहुत रूप रहकर निष्पक्षता पूर्वक कार्य करने से नीति या योजनाओं की पहुंच सही व्यक्ति तक होगी।
- कार्यकुशलता में वृद्धि => आचरण संहिता के कारण लोग अपने कार्यों के प्रति सजग, कुशल व दुरुस्त रहेंगे जिससे वह कर्तव्य विमुख नहीं होंगे।

5

(Mains Answer Sheet)

नैतिक आचरण के विकास → प्रशासकों में नैतिक आचरण जैसे ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा आदि को बढ़ावा देने के लिए।

सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के लिए → आचार संहिता के होने पर प्रशासक अपने विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग नहीं करेंगे।

इस तरह आचरण संहिता प्रशासन को कुशल रूप से संचालित व जनकेन्द्रित बनाने के लिए आवश्यक है किंतु जरूरी है कि इनका दृढ़ता पूर्वक पालन किया जाये।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(K) नैतिक मूल्यों के पतन के कारण लिखो ?

मूल्य वे हैं जो मानव के सोच, व्यवहार एवं कार्यों को मार्गदर्शन कर जीवन को परिष्कृत, सार्थक व गरिमापूर्ण बनाते हैं। इसके अंतर्गत दया, करुणा, प्रेम, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा आदि को लिया जाता है।

वर्तमान समय में इन मूल्यों का पतन होता जा रहा है जिसके पीछे निम्नलि० कारक हैं -

भौतिकवाद का प्रभाव => विज्ञान व तकनीकी ने मानव को भौतिकवादी बना दिया। अब तक 'सादा जीवन उच्च विचार' के स्थान पर 'खाओं पीओ मौज उड़ाओ' की प्रवृत्ति पनप रही जिससे मूल्यों का पतन तीव्र गति से हुआ।

केन्द्रित कार्य संस्कृति का अभाव => संगठन में पारदर्शिता तथा जवाबदेहिता के अभाव ने संगठन में मूल्यों को गिराया।

आर्थिक असमानता => समाज में अमीर-गरीब के बीच भेद ने नैतिक मूल्यों को गिराया।

संयुक्त परिवार का विघटन => न्यूक्लीयर फेमली की अवधारणा ने बच्चों में मूल्यों के पतन को बढ़ावा।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

औद्योगिकीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ⇒ औद्योगिकीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने मशीनीकरण को बढ़ावा दिया तथा मानव को मानव नहीं बल्कि मशीन समझा जाने लगा जिससे मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ।

शिक्षण संस्थाओं ⇒ शिक्षण संस्थाओं अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति व महान नेताओं, विचारकों के बारे में न बताया जाना नैतिक मूल्यों का ह्रास किया।

इस तरह बदलते युग में नैतिक मूल्यों के पतन को तीव्र किया गया तथा उसकी आवश्यकता को देखते हुए सिविल सेवा में नैतिक अभिवृत्ति को शामिल करना साथ ही स्कूलों में भी इस विषय को शामिल करने पर बल देना चाहिए।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या 5

नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए क्या उपाय किये जा सकते है?

नैतिक मूल्य वे कसोटियाँ या व्यवहार के मानदण्ड है जिसके आधार पर उचित-अनुचित, सही-गलत, कर्तव्य-अकर्तव्य आदि का निर्धारण किया जाता है व जिन्हे हम जीवन में वांछनीय मानते है जैसे-दया, करुणा, प्रेम, सत्य, ईमानदारी आदि।

नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए निम्न उपायों को अपना सकते है-

- परिवार के माध्यम से => दैनिक दिनचर्या के माध्यम से
  - माता-पिता की व्यक्तिगत जीवन रही
- स्कूलों के माध्यम => शिक्षण संस्थाएं बच्चों में चरित्र निर्माण
  => महान नेताओं, विचारकों के जन्मदिन मनाया जा सकता।
- मीडिया के माध्यम => घटनाओं को निष्पक्ष रूप से रखना
  => कार्यक्रमों के माध्यम से
- नागरिक समाज => जनता को जागरूक व शिक्षित किया जाता है
-

उपरोक्त के माध्यम से नैतिक मूल्यों को बढ़ाया जा सकता जिनमें सबसे प्रमुख भूमिका परिवार व शिक्षण संस्थाओं की होती बाल्य अवस्था में मूल्यों को विकसित करते हैं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(14) भ्रष्टाचार को अल्पतम करने में मीडिया की भूमिका ?

किसी शासकीय कर्मचारी द्वारा अपने सार्वजनिक पद, स्थिति अधिकार का दुरुपयोग करते हुए किसी प्रकार का आर्थिक या अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त करना भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार कम करने में मीडिया की भूमिका को निम्न प्रकार से समझ सकते है -

- सरकार के क्रियाकलापों पर पैनी नजर रखकर।
- शासन - प्रशासन के भ्रष्टाचार को उजागर कर।
- लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक कर।
- सूचना के अधिकार, सिटीजन चार्टर आदि की लोगों के बीच जानकारी और उपयोग कर।
- मीडिया सरकार पर दबाव डाल कर पारदर्शिता व जवाबदेहिता सुनिश्चित करा सकती है।
- स्टिंग आपरेशन कर।
- सरकारी योजनाओं पर वाद - विवाद कर सरकार पर दबाव।
- मीडिया जनता को नैतिक रूप से जागरूक कर।

उपरोक्त माध्यमों व मीडिया विधायिका कार्यपालिका व प्रशासन पर नियंत्रण करती है तथा सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह बनाकर भ्रष्टाचार को अल्पतम कर सकती हैं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

(Mains Answer Sheet)

(8) समर्पण की भावना लोक प्रशासन का औचित्य क्या है?

सिविल सेवा के आध्यात्मिक मूल्यों एवं आदर्शों को स्वीकार करते हुए विनम्रतापूर्वक सत्यनिष्ठा के साथ नागरिक सेवाओं के त्वरित प्रदानी, निष्पक्ष एवं गुणवत्ता पूर्ण आपूर्ति ही सिविल सेवा के प्रति समर्पण का भाव दर्शाता है।

लोक प्रशासन में समर्पण होने पर भी भावना होने पर निम्नलिखित होते हैं –

- सार्वजनिक हित में कार्य करेगा।
- जनता का विश्वास प्रशासन पर बढ़ता व प्रशासनिक व राजनैतिक कार्यों में जनभागीदारी बढ़ती है।
- प्रशासन की जवाबदेही जागरित होगी
- प्रशासकों में समर्पण की भावना होगी तो उनमें निष्पक्षता, विनम्रता, संवेदनशीलता, सहानुभूति जैसे तत्वों का विकास होता है।
- संवैधानिक मूल्य समानता, स्वतंत्रता आदि को केन्द्र से लागू किया जाता है।
- लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना होती।
- अंत्योदय की संकल्पना साकारित होती।
- योजनाओं का क्रियान्वयन कुशलता रूप से होता है। आदि।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

अतः लोकप्रशासन का आवश्यक गुण पर्याप्त है तभी गांधी होगा आवश्यक तभी गांधी जी की सर्वोदय की अवधारणा साकारित होगी।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या (10)

विवेक के संकट में अंतः प्रेरणा की भूमिका

विवेक के संकट से आशय है कि किसी व्यक्ति के पास दो या दो से अधिक विकल्प हो एवं वह विकल्प एक-दूसरे से भिन्न व एक साथ न चुने जा सकते हो, किंतु चुनना अनिवार्य हो व उस विकल्प से पूर्ण संतुष्टि न होती हो तो उसे विवेक का संकट कहते हैं

विवेक के संकट के दो प्रकार

- व्यक्तिगत लाभ आधारित नैतिक मूल्य
  - जैसे व्यक्तिगत हित व सामाजिक हित के बीच
  - सामाजिक हित
- द्विविकल्पीय नैतिक मूल्यों में दुविधा
  - दोनों नैतिक मूल्य से जुड़े
  - नियम कानून का उल्लंघन
  - अनुकूल का उपयोग

अंतरात्मा मानव के अंदर एक नैतिक शक्ति होती है जो किसी कर्म के उचित-अनुचित होने का सहज ज्ञान प्रदान करती है व उचित कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

2.5

विवेक के संकट अथवा नैतिक दुविधा में
अंतरात्मा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है –
अंतरात्मा सदैव सार्वजनिक हित को वरीयता
– आपदा के समय नियम व कानून की प्रक्रिया
अपनाने की बजाय जान-माल की रक्षा यह
अंतरात्मा की आवाज होती कि कौन सा कार्य
सर्वोपरि है
– नियम, कानून के होते हुए अंतरात्मा की आवाज
से निर्णय लिया जा सकता है जो उचित होता है।

इस प्रकार अंतरात्मा विवेक के संकट
में उचित निर्णय लेने में सहायता करती है।

(Mains Answer Sheet)

संख्या

Case Study 1

उपरोक्त प्रकरण सरकारी संगठन में व्याप्त कार्यसंस्कृति, लालफीताशाही, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, सत्यनिष्ठता, जवाबदेहिता, त्वरित कार्यवाही, जनहित आदि मामलो से संबंधित है।

उपरोक्त मामले में एक पक्षकार उभरकर आता है जिसके समक्ष निम्न चुनौतियां है-

आप (संगठन के मुखिया) → चुनौतियां
- संगठन की कार्य संस्कृति
- अधिकारियों में अपने कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठा, जवाबदेहिता का अभाव
- ईमानदारी न होना
- जनहित की अवहेलना
- प्रबंधन न होना

आदि चुनौतियां विद्यमान है।

(a) सरकारी संगठनों की सेवाओं की गुणवत्ता निम्न स्तर की होने के कारण?

सरकारी संगठनों में सेवाओं की गुणवत्ता निम्न स्तर होने के निम्न कारण है-

संख्या

(Mains Answer Sheet)

- सरकारी संगठनों में आचरण संहिता व नैतिक संहिता का अभाव है, अगर है भी इसका तो इनका कठोरता से पालन नहीं होता।
- सरकारी अधिक कर्मचारियों में नौकरी की सुरक्षा होने से वह अपने कार्यों में लापरवाही बरतते हैं।
- संगठन में प्रबंधन व नेतृत्व क्षमता का अभाव देखने को मिलता है।
- अधिकारियों में नैतिक मूल्यों का न होना जैसे ईमानदारी, जनसेवा का भाव, अनुकंपा, निष्पक्षता आदि की कमी पाई जाती है।
- सरकारी संगठनों में लालफीताशाही होने से भ्रष्टाचार व्याप्त होता है।
- जनता में जागरूकता का अभाव।
- इनमें कामकाज का कम्प्यूटरीकरण न होना।
- जनता में पुरस्कार व अधिकार नागरिक चार्टर जैसे अधिकारों की जानकारी न होना आदि।
- अधिकारियों में लाइसेंस राज की मनोवृत्ति। आदि

उपरोक्त कारणों से सरकारी संगठन की सेवाएं निम्नस्तर की होती हैं जो जनसेवा न होकर व्यक्तिगत सेवा होती है।

(B) आप अपने स्टाफ को किस प्रकार से प्रेरित करेंगे कि उपर्युक्त कमियों का निदान हो जाये?

संगठन का अध्यक्ष होने के नाते मेरा यह कर्तव्य होता है कि संगठन का कुशल व कार्यकुशलता के साथ संचालन हो इसके लिए मैं निम्न उपायों को अपना सकता हूं।

- अनुनय विनय के माध्यम से अधिकर्मचारियों की [illegible] में परिवर्तन किया जा सकता है।
- [illegible] की अपनी कमियों व विकल्पों से बोध कराकर।
- आचरण व नैतिक संहिता का कठोरता से पालन कराकर।
- इस प्रकार व ऐसे का अच्छा कार्य करने वाले पुरस्कार व प्रशंसा व कर्मियों में कानिभिन्ता दिखाने वाले और अनुशासनात्मक कार्यवाही।
- संगठन में महान विचारकों के बारे में बताकर जिससे वह वह उनकी बातों से प्रेरित हो सके।
- स्वयं अपने कार्यों को त्वरित व ईमानदारी से करेंगे तभी आपके संगठन के कार्मिक आपसे प्रेरित होंगे आदि

आदि उपायों को अपनाकर संगठन की कार्यसंस्कृति में परिवर्तन लाकर संगठन में गतिशीलता लाकर जनकल्याण का कार्य करेंगे।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

2

Case Study 2

उपरोक्त प्रकरण में वंचितों के हितों, सरकारी व अभिजात्य स्कूलों में शिक्षा के मापदंड, कथनी-करनी में अंतर, सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों के संदर्भ में बात की गई है

उपरोक्त मामले में एक पक्ष यह उभरकर आता जिसके प्रमुख निम्न चुनौतियां है-

चुनौतियां

निशांत — समाजवादी विचार धारा, वंचितों के अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता, पारिवारिक हित, तटस्थता जैसी चुनौतियां है

(a) क्या निशांत को भी अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिला देना चाहिए?

चूंकि इस प्रकरण में बताया गया कि निशांत सामाजिक रूप से संवेदनशील, ~~सामाजिक~~ समाजवादी विचारधारा, वह नीति प्रोफेसर है तथा वह अल्पसंख्यकों, मजदूरों, महिलाओं और जनजातियों के हितों में अपनी आवाज उठाते हैं

साथ ही वह पार्टी के थिंक टैंक भी जो आह्वान करते है कि समृद्ध लोगों, नेताओं, राजनीतिज्ञों व अधिकारियों को अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिलाना चाहिए।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

इस प्रकार की तरह के आहवान के बाद निर्मोत को अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश दिला देना चाहिए।

- गांधी जी कहते है कि हम जो परिवर्तन देखते में चाहते है वह पहले स्वयं में लाया जाना चाहिए।

किंतु सरकारी स्कूल में प्रवेश दिलाने के पहले सरकारी स्कूलों हेतु निम्न लि. मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकता है -

- सरकारी स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार
- योग्य शिक्षकों की नियुक्ति
- आधारभूत संरचना
- वैश्विक स्तर का पाठ्यक्रम आदि

साथ ही अभिजात्य स्कूलों में भी वंचित समुदाय को प्रवेश की सुविधा होनी चाहिए सामाजिक न्याय आधारित होगा।

(ग) क्या निर्मोत को बौद्धिक विमर्श त्याग देना चाहिए?

(उ) आलोचना को ले डरकर बौद्धिक विमर्श त्यागना कोई बुद्धिमत्ता का काम नहीं। इसे निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता।

- निर्मोत पहले से वंचितो के हितो के लिए आवाज उठाते आये हैं।
- समाज में समानता स्थापित करने के लिए बौद्धिक विमर्श की आवश्यकता है।

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

जैसे सरकारी स्कूलों में प्रवेश के पहले उनमें सुधार के मुद्दों को उठाना आवश्यक है अधिकांश स्कूलों में हो रहे असमानता को प्रखरता विरोध करना।

उपरोक्त से शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को समान रूप से प्राप्त हो सके।

(1) क्या उन्हें किसी पार्टी के लोगों को समर्थन में खड़ा करना चाहिए?

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

(d) उन्हें अपने बच्चे का प्रवेश अनिवार्य स्कूल में करा देना चाहिए। विवेचना कीजिए

A. इस प्रसंग में कथनी-करनी की बात कही गई

- निशांत जी समानतावादी विचारधारा के व्यक्ति हैं जो राज्य के सभी पायदानों पर सरकार को अधिकार को बल दिया जाता है
- साथ ही वह वंचितों के प्रति संवेदना भी रखते व उनके अधिकारों के लिए आवाज भी उठाते हैं।
- अतः वह सहानुभूति, दया, नेतृत्वक्षमता आदि मूल्यों से युक्त हों
- परिणीति, समाजसुधारक होने के नाते लोगों से आह्वान भी अर्थात सरकारी स्कूल में प्रवेश के लिए प्रेरित

इन सबके बावजूद भी वह इन बातों को व्यवहारिक रूप से अपने ऊपर लागू नहीं करते व अपने बच्चे का प्रवेश अनिवार्य स्कूल में कराने का प्रयास करते हैं इसके पीछे का कारण सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता व अन्य सुविधाएं न होना है।

(e)

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(क) ~~अभिजात्य क्यों~~

सामान्यतः बुद्धिजीवी वर्ग अपने बच्चों का एडमीशन अभिजात्य स्कूलों करवाते है? क्यों?

बुद्धिजीवी वर्ग अपने बच्चों का एडमीशन अभिजात्य स्कूलों मे कराने के निम्न कारण हैं -

शिक्षा की गुणवत्ता उच्च स्तर

अत्याधुनिक संरचना का होना।

योग्य शिक्षकों की नियुक्ति।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर का पाठ्यक्रम।

पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियों जैसे खेल आदि का होना।

अंग्रेजी माध्यम। आदि

उपरोक्त कारण अभिजात्य स्कूलों में प्रवेश कराने के होते है, यदि यही सुविधाऐं सरकारी स्कूलों में प्राप्त हो जाये तो क्षेत्रीय असमानता खत्म हो जायेगी व प्रत्येक अभिजात्य वर्ग अपने बच्चों को सरकारी स्कूल भेजेगा साथ ही समाज में अमीर-गरीब का भेद भी कम होगा।